जर्मनी में पर्यावरण संरक्षण की अनुकरणीय मिसालें

अन्वेषा बोरठाकुर

जर्मनी को उसकी पर्यावरणीय जागरूकता के लिए जाना जाता है। यह देश विभिन्न पर्यावरणीय सुरक्षा और संरक्षण प्रयासों में सदैव आगे रहा है। जर्मनी में एक इंटर्न के रूप में मुझे वहां पर्यावरण संरक्षण सम्बंधी प्रयासों का प्रत्यक्ष अनुभव करने का मौका मिला। प्रवास के दौरान मैंने जर्मनी के फेडरल प्रांत हेसन स्थित केलरवाल्ड-एडरसी राष्ट्रीय उद्यान और बार्गवाल्ड नेचर पार्क का भ्रमण किया।

आइए सबसे पहले जर्मनी और युरोप के संदर्भ में इन दोनों वन्यजीव उद्यानों के महत्व के बारे में जान लेते हैं। प्रसिद्ध केलरवाल्ड-एडरसी राष्ट्रीय उद्यान करीब 5700 हैक्टर में फैला हुआ है। मध्य युरोप के सबसे अंतिम और प्राकृतिक बीच वृक्ष के जंगलों को यहां पूर्ण संरक्षण दिया गया है। इस जंगल में करीब 40 फीसदी बीच वृक्ष 120 साल से भी अधिक पुराने हैं। यहां कुछ विशालकाय वृक्ष तो 160 साल से अधिक पुराने हैं और ये केवल जर्मनी में ही नहीं, बल्कि पूरे युरोप में अद्वितीय है। इसलिए केलरवाल्ड-एडरसी राष्ट्रीय उद्यान में स्थित इन बीच वृक्षों को सुरक्षित रखने का काफी महत्व है।

बर्गवाल्ड नेचर पार्क न केवल जर्मनी के मध्य में, बल्कि पूरे युरोप के लगभग बीच में ही स्थित है। संपूर्ण युरोप के लिए इसका काफी पर्यावरणीय महत्व है। यहां के दलदल कार्बन सिंक के रूप में काम करते हैं और इस तरह जलवायु परिवर्तन व वैश्विक तापमान को नियंत्रण में रखने में मददगार साबित होते हैं। इन दलदलों में पाई जानी वाली एक विशिष्ट वनस्पति बारलैप के कारण यहां का तापमान शेष मध्य युरोप के तापमान की तुलना में हमेशा करीब 4 डिग्री सेल्सियस तक कम रहता है। इसलिए साफ है कि केलरवाल्ड-एडरसी राष्ट्रीय उद्यान और बर्गवाल्ड नेचर पार्क इन दोनों का युरोप में पर्यावरणीय संरक्षण की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण स्थान है।

जर्मनी में इंटर्नशिप के दौरान मुझे विभिन्न गतिविधियों के ज़रिए काफी अनुभव मिला, जिनमें से कुछ का उल्लेख करना उचित होगा। इनमें से कुछ अनुभवों से काफी कुछ सीखा जा सकता है, खासकर पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में। इनसे हमारे देश में पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों को भी काफी बल मिल सकता है।

ए-4 रोको अभियान

अपनी इंटर्नशिप के दौरान मैं एक बहुत ही रोचक कार्यक्रम - स्टॉप ए-4 का भी हिस्सा रही। ए-4 एक एक्सप्रेस हाईवे है, जिसका बर्गवाल्ड नेचर पार्क से गुज़रना प्रस्तावित है। लेकिन इस नेचर पार्क से सटे एक कस्बे विटर के निवासी जानते थे कि अगर यह हाईवे बन गया तो यह पर्यावरण के लिए कितना घातक साबित होगा। एक्सप्रेस हाईवे के निर्माण से नेचर पार्क में रहने वाले प्राणियों को गंभीर नुकसान पहुंचेगा। इस हाईवे पर तेज़ गति से गुज़रने वाले वाहनों की चपेट में आकर कई वन्य प्राणी अपनी जान गंवा देंगे। इसके अलावा हाईवे से वायु प्रदूषण में भी भारी इज़ाफा होगा, जिसका असर अंततः विटर के निवासियों पर पड़ेगा। हवा की दिशा और गति का अध्ययन करने के बाद वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे कि साल के अधिकांश दिनों में वाहनों का शोरगुल हवाओं के साथ इस कस्बे में पहुंचता रहेगा। हालांकि कस्बे के लोग ध्वनि प्रदूषण के कारण उन्हें होने वाली परेशानियों से भी ज़्यादा चिंतित नेचर पार्क और वहां रहने वाले वन्य प्राणियों को पहुंचने वाले संभावित नुकसान को लेकर थे।

इस हाईवे के निर्माण के खिलाफ उन्होंने अद्भुत विरोध अभियान शुरू किया। इस अभियान के तहत उन्होंने उस मार्ग पर पौधों का रोपण किया जहां से प्रस्तावित हाईवे गुज़रने वाला था। वे हर माह पौधारोपण करते थे और इस तरह से वे हाईवे निर्माण के खिलाफ अपना विरोध जताते। चूंकि जर्मनी में किसी भी पेड़ को काटने के खिलाफ बेहद सख्त कानून है, इसलिए निश्चित रूप से यह तरीका हाईवे

के निर्माण में रुकावटें पैदा करता। किसी विशिष्ट मुद्दे पर नागरिकों द्वारा इस तरह का विरोध प्रदर्शन भारत में नज़र नहीं आता। यह विरोध इतना शांतिपूर्ण था कि इससे कस्बे के लोगों के दैनिक कार्यों में बाधा नहीं पड़ी और सम्बंधित अधिकारियों तक यह संदेश भी पहुंच गया कि क्षेत्र के नागरिक एक्सप्रेस हाईवे के खिलाफ हैं।

यहां यह उल्लेखनीय है कि पर्यावरण के प्रति जागरूक विटर के नागरिकों ने पौधों का रोपण बगैर सोचे-समझे नहीं किया था। उन्होंने पौधारोपण कार्यक्रम पर पूरी निगरानी रखी और बाहरी प्रजातियों के पौधों के स्थान पर देसी प्रजातियों के पौधों को वरीयता दी। वे इस वैज्ञानिक तथ्य से भलीभांति अवगत थे कि भविष्य में बाहरी प्रजातियों की वनस्पतियां देसी वनस्पतियों पर आधिपत्य स्थापित कर लेंगी और इस तरह क्षेत्र के इकोसिस्टम को बदल देंगी। विटर कस्बे के नागरिकों में इस कार्यक्रम के प्रति काफी उत्साह देखने को मिला। लगभग हर नागरिक ने इस कार्यक्रम में सक्रिय हिस्सेदारी दिखाई। वे सभी बर्गवाल्ड नेचर पार्क से गुज़रने वाले हाईवे के निर्माण को रोकने के लिए कृत संकल्पित थे।

मेंढकों का संरक्षण

केलरवाल्ड-एडरसी राष्ट्रीय उद्यान में कार्य करते हुए हमने जर्मनी में पर्यावरण संरक्षण के कुछ अद्भुत प्रयासों का अध्ययन किया। ऐसा ही एक प्रयास मेंढकों के संरक्षण का था। जिस तरह का एक्सप्रेस हाईवे बर्गवाल्ड नेचर पार्क में प्रस्तावित किया गया था, वैसा ही एक अन्य एक्सप्रेस हाईवे जर्मनी के ऐसे वन्य क्षेत्रों से गुज़रता है, जहां मेंढकों की आबादी काफी ज़्यादा है। मेंढक भोजन की तलाश या अन्य कारणों से अक्सर हाईवे को पार करते थे। इस प्रयास में अनेक मेंढक तेज़ गति से चलते वाहनों की चपेट में आकर जान गंवा देते थे। मेंढकों के इस तरह से मारे जाने से वन्य जीव क्षेत्रों के संरक्षण के प्रयासों के सामने गंभीर संकट पैदा हो गया। इसे रोकने के लिए सम्बंधित अधिकारियों ने मेंढकों की अधिक आबादी वाले इलाकों में ऐसे ओवरब्रिज बनाने का फैसला किया, जिनके ज़रिए मेंढक आसानी से हाईवे को पार कर जाएं। जंगल से गुज़रने वाले हाईवे के आसपास प्राकृतिक बागड़ लगा दी गई। इन ओवरब्रिजों को लताओं के ज़रिए प्राकृतिक स्वरूप दिया गया। इस क्षेत्र के मेंढकों को इस तरह से मोड़ा गया कि वे बड़ी आसानी से ओवरब्रिज पर चढ़कर बगैर किसी बाधा के हाईवे पार कर जाए।

जर्मनी पर्यावरण को लेकर बहुत ही सजग राष्ट्र है। अपने प्राकृतिक संसाधनों और वन्य जीवन को बचाने के लिए वहां किए जा रहे प्रयास वाकई सराहनीय हैं। वहां पर्यावरण संरक्षण के लिए जिस मॉडल का अनुसरण किया जा रहा है, वह भारत जैसे विकासशील देशों के लिए भी अनुकरणीय हो सकता है। पर्यावरण संरक्षण को लेकर जर्मन नागरिकों में जागरूकता का जो स्तर है, वह उस देश के लिए एक वरदान है। ***(स्रोत फीचर्स)***